॥ खंड ०८/०१ ॥

॥ ओवी नं. २५ ॥

सोनेगांव दांडातील रामप्रसाद-हनुमानप्रसाद पाल बंधु यांच्या पाठातील..

॥ कृष्णपुरी ची ओवी ॥

॥ गडबड मत करना ॥

॥ गडबड मत करना मत करना । भाव भजनसे लढना ॥ घृ ॥
॥ मगरूरीमे मत रहना । मुश्कील होंगी सुधारना ।
तुम गरीबीसे रहना ॥
॥ दोहीत पाखंड सब झोड देना । ग्यान-ध्यान की तलवार लेना ।
आगे आगे कदम बढाना ॥
॥ छे जनोंसे बाते मत करना । छत्तीस पर तु शस्त्र चलाना ।
पंचेचाळीस चौक्या मिटाना ॥
॥ आशा मनशा पापी कल्पना । बत्ती लगाकर सब जला देना ।
देखो भगवत का ठिकाणा ॥ ०४ ॥
॥ माया ममता बाजु हटाना । पहली पार निकल जाना ।
सांगड हरी नामकी धरना ॥
॥ तिरगुण तो करे धिंगाणा । शुध्दसत्व पर ध्यान देना ।
दया शांती प्रसन्न करना ॥
॥ स्थुल सुक्ष्म को आगे बढाना । कारण महाकारण मे जाना ।
अतीकारण की धुनी लगाना ॥
॥ जागृतीमे भजन करना । स्वप्नी सुषप्ती कभी नही भुलना ।
देखो तुरीयाका करीना ॥ ०८ ॥
॥ कृष्णपुरी की बात नही भुलना । दुर्जन को कभी नही डरना ।
आगे भगवतसे मिलना ॥ ०९ ॥

भजने :- ॥ भगवत भजन करो भाई । उसमे किसनजी है रे ॥
॥ भगवत भजन कर भोला । घट घटमे पडेगा उजाला ॥
॥ भगवत भजन कर भैया । अंबर होंगी तेरी काया ॥

॥ ओवी नं. २६ ॥

सोनेगांव दांडातील रामप्रसाद-हनुमानप्रसाद पाल बंधु यांच्या पाठातील..

॥ कृष्णपुरीची ओवी ॥

॥ मेरा धनी फिरसे आया ॥

॥ मेरा धनी फिरसे आया । फिरसे डंका बजाया ॥ घृ ॥
॥ किसनजी सावंगपुरमे आया । उसने क्या वाणी बतलाया ।
तुम्हारे समज मे नही आया ॥ फिरसे डंका बजाया..
॥ प्रजापती धनी आया । उसने ब्रम्हरस लाया ।
कोई पिना नही पाया ॥ फिरसे डंका बजाया..
॥ जिसने ब्रम्हरस पिया । लाखोमे एक अंबर हो गया ।
बाकि रही सब कच्ची दुनिया ॥ फिरसे डंका बजाया..
॥ भक्ती करने किसनजी आया । दवंडी देके पुकार किया ।
नाम चतुर्पती बढाया ॥ ०४ ॥ फिरसे डंका बजाया..

भजने :- ॥ दवंडी देल्ली कृष्णानं । सत्य शकुन हे सिदाई वचन ॥
॥ हरीला भजा । लावुन ध्वजा ...। जीवलग राजा, आला आत्माराजा ॥

॥ कृष्ण महाराज धनी अवधुत ॥